International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 7 Issue 8, August 2017,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पंचायती राज में महिला सशक्तिकरण

. डॉ उषा किरण
रिसर्च फेलो
बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालयए मुजफ्फरपुर ।

प्रस्तावना .

सत्ता के विकेंद्रीकरण और जनलोक भागीदारी को हम पंचायती राज के नाम से जानते हैं। यह लोक भागीदारी तभी सुनिश्चित हो सकती थी जब आधी आबादी को हाशिये से उठा कर मुख्यधारा में जोड़ा जाताए जिससे उनकी भी भागीदारी सुनिश्चित हो पाती। बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने इस तथ्य को स्वीकारा और पंचायती राज निकायों में महिलाओं को 50: का आरक्षण प्रदान कर इतिहास रच डाला।

आज ग्रामीण महिलाओं की तस्वीर ही बदल गई है। उनपर सरकारी नीतियों का व्यापक प्रभाव दिखाई पड़ रहा है। घर की चारदीवारी के भीतर दुबकीए सिसकती घूंघट की ओट में छिपी कितनी जिंदगियाँ अपने.अपने पहचान की खोज को उत्सुक हुई हैं। कहावत है कि जब रास्ते आसान हो जाते हैं तो वहाँ कदमों के निशान बनते चले जाते हैं। पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की स्वतंत्रताए समानताए मजबूती और महत्ता की वकालत की जाती है। इन संस्थाओं में महिलाओं के लिए 50: आरक्षण की व्यवस्था से काफी कुछ बदलाव आना शुरू हुआ है। आज हमारे देश में महिला प्रतिनिधियों की संख्या विश्व में प्रथम स्थान पर है। पंचायत स्तर पर महिलाओं की भागीदारी ने स्थानीय स्तर पर सामुदायिक जीवन और उसकी चेतना और संस्कृति में भी परिवर्तन लाया है जिससे सामाजिक और आर्थिक समीकरण में भी बदलाव आया है। पंचायतों में महिला भागीदारी के साथ.साथ महिला आत्मनिर्भरता भी बढ़ी है। आज वे महिलायें पंचायतों से निकलकर हर दिशा में कदम बढ़ा रही हैं और राष्ट्रीय विकास में अपना सहयोग दे रही हैं। आज गाँव देहात की तस्वीर बदली.बदली नजर आती है तो इसका कारण है सरकारी योजनाएं हैं जिनमें महिलाओं को प्राथमिकता दी गई है।

ग्रामीण पृष्ठभूमि में महिला सशक्तिकरण का प्रभाव .

1. शिक्षा पर प्रभाव .

ग्रामीण पृष्ठभूमि में महिला सशक्तिकरण को हम व्यापक रूप से देख सकते हैं। सरकारी नीतियों ने ग्रामीण महिलाओं को काफी सशक्त किया है। प्रत्येक ग्राम में वार्ड स्तर पर आंगनवाड़ी केंद्रों की स्थापनाए सरकारी विद्यालय में महिला शिक्षिकाओं की नियुक्तिए आशाए ममता कार्यकर्ताओं की नियुक्ति जैसी तमाम योजनाएं महिलाओं में जागरूकता लाने का एक सफल प्रयास है ।एक समय था जब घर की चौखट के भीतर महिला की प्रस्थिति निर्धारित थी। घर की चौखट लांघना एक दुरूह कार्य और अशोभनीय बात थी किंतु अब वही महिलायें घूंघट की ओट से बाहर निकल अपने अधिकारों का बखूबी उपयोग कर अपना और अपने परिवार का भला करने में पीछे नहीं रहती हैं।

ग्रामीण परिवेश स्कूल के सुदूर होने के कारण असुरक्षा की भावना से अपनी बेटियों को स्कूल नहीं भेजता था किंतु अब हर गाँव में विद्यालय खुलने और वहाँ शिक्षिकाओं की नियुक्ति होने और विद्यालयों में आवश्यक मूलभूत सुविधाओं की सुनिश्चितता के कारण अब शायद ही कोई बेटियाँ शिक्षा से वंचित रह पाती हैं। अब वे दिन लद गये जब स्कूल की दूरी बालिका शिक्षा को प्रभावित को करती थी। अब हर पाँच किलोमीटर के अंदर में हाई स्कूल की स्थापना और साथ ही बालिका साइकिल योजना ने बालिका शिक्षा पर प्रभाव व्यापक डाला है। विद्यालय में उपलब्ध सरकारी योजनाएं जैसे मध्याह्न भोजनए पोशाकए छात्रवृत्तिए साइकिल योजनाए नैपकिन योजना इत्यादि जैसी योजनाएं बालिका शिक्षा को प्रभावित किया है जो बेहद सराहनीय है। गाँव की पगडंडियाँ बेटियों के साइकिल से स्कूल जाने कारण गुलजार रहती हैं।

2 . स्वास्थ्य पर प्रभाव .

आज की माताएँ घर की चौखट के बाहर निकलकर स्वयं और अपने बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति सचेत हुई हैं। यह सद्प्रयास आंगनवाड़ी केंद्रोंए आशाए ममता स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की नियुक्ति के कारण हुआ है। भले ही तस्वीर का एक पहलू ऐसा होता है कि उन तक योजनाओं का आंशिक लाभ ही पहुंच पाता है बाकी बिचौलिए गटक जाते हैं। शिक्षा का प्रभाव पड़ने से उनका स्वास्थ्य कैसा है दिखाई दे रहे हैं कि महिला की शिक्षा और उनके स्वास्थ्यए रहन.सहन आदि में भी बदलाव आया है। यह बदलाव साफ दिखाई दे रहा है। कि महिला की शिक्षा और स्वास्थ्य किस प्रकार प्रभावित हुआ है। उनमें बहुत जागरूकता आई है। वह स्वयं को साबित करने के लिए अवसर से चूकना नहीं चाहती।

जब गाँव में चुनाव का माहौल होता है तो महिला प्रत्याशी स्वयं के लिए बड़े आत्मविश्वास के साथ घर. घर वोट मांगने पहुंचती है। वह घूंघट में रहने वाली महिला का दूसरा जन्म होता है। भले ही जीत उनकी न होकर उनके पति की जीत होती है किंतु अब वह दिन भी दूर नहीं जब सत्ता की बागडोर थामें वे नए अवतार में दिखेंगी। आज की नारी अपनी खुली आँखों से सपने देख उन्हें पूरा करने का प्रयास करती नजर आती है। अपने सपनों में रंग भरने का अधिकार पा चुकी बेटियाँ अपने संकल्प पर खरी उतरती नजर आ रही हैं। वह स्वयं का विश्वास जीत चुकी हैं कि वे हर तरह की भूमिका निभा सकती हैं। शनैः.शनैः कदम बढ़ाती बेटियाँ हर क्षेत्र मेंए हर मंजिल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करातीं कुछ कर गुजरने का हौसला रखती हैं।

3 .पारंपरिक हुनर को प्रोत्साहन .

ग्रामीण महिलाओं को उनके परंपरागत कलात्मक हुनर को सरकारी संरक्षण प्राप्त हुआ है। उनके हाथ से बनाए हस्तकला की विविध वस्तुएं और पेंटिंग आदि की प्रदर्शनियां लगाकर उन्हें उचित दाम दिलाया जाता है जिससे उनकी कला में निखार आने के साथ.साथ उन को आर्थिक सहायता भी प्राप्त होती है। महिलायें विभिन्न क्षेत्रों में पारंगत हो रही हैं और प्रशिक्षण के माध्यम से अपनी कला दक्षता का प्रत्यक्ष प्रदर्शन भी कर रही हैं जिसमें मधुबनी पेंटिंगए

सुजनी कलाए हस्तकला इत्यादि प्रमुख हैंए जिनके माध्यम से महिलायें अपनी आय में वृद्धि कर अपने नाम भी रौशन कर रही हैं।

4. स्वयं सहायता समूहों का गठन .

स्वयं सहायता समूहों का गठन महिला सशक्तिकरण का एक प्रमुख माध्यम है। देश के विकास की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए यह संस्था विभिन्न स्तरों पर कार्य करती है। इन के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की मंशा काफी उपयोगी सिद्ध हुई है। इस से महिलाओं में नेतृत्व की क्षमता का विकास हुआ है। उनके जीवन की दशा सुधरने से उनका शिक्षा की ओर झुकाव बढ़ा है। उनके पोषण दर में सुधार हुआ है और जनसंख्या नियंत्रण के महत्व को वे समझने लगी हैं।

स्वयं सहायता समूहों में महिलाओं द्वारा उत्पादित विभिन्न खाद्य पदार्थ जैसे आचारए पापड़ए बड़ीए दलियाए आटाए अगरबत्तीए मुरब्बा इत्यादि की सुगम उपलब्धता से महिलाओं और बच्चों के पोषण तथा विकास में महत्वपूर्ण योगदान मिला है। महिलाओं को श्रम आधारित भिन्न.भिन्न प्रकार के स्वरोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं जिससे उनकी स्थिति समाज में सुदृढ़ हुई है। महिला सशक्तिकरण की दिशा में स्वयं सहायता समूहों के गठन से यह सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहा है।

5. आत्म विश्वास में वृद्धि .

जब महिलाएं घर से बाहर निकल कर शिक्षा ग्रहण कर रही हैं और अनेक क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं तो उनके भीतर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ हैए जो उन में नया जोश और उमंग भर रहा है। वह निष्ठाए सच्चाई और लगन से अपने कार्य को अंजाम तक पहुंचा रही हैं। चाहे वह क्षेत्र नौकरी का हो या स्वरोजगार का। उनके सपनों को पंख लग गए हैं। यह समाज का सबल पक्ष है जो सकारात्मक बदलाव की ओर संकेत करता है।

महिला सशक्तिकरण को सुनिश्चित करती कुछ सरकारी योजनाएँ .

1 मुख्यमंत्री नारी शक्ति योजना
2 मुख्यमंत्री कन्या सुरक्षा योजना
3 घरेलू हिंसा की रोकथाम के लिए योजना
4 कार्य स्थल पर लैंगिक अपराध से महिलाओं की रक्षा योजना
5 मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना
6 कामकाजी महिलाओं और बच्चों के लिए शिशु शाला योजना
7 लक्ष्मीबाई सुरक्षा पेंशन योजना
8 बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना

9 सुकन्या समृद्धि योजना

पंचायती राज्य में महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने के उपाय .

भले ही आरक्षण प्रदान कर सैद्धांतिक रूप से महिलाओं को शक्तियाँ प्रदान की गई है परंतु वास्तविक नियंत्रण तो पुरुष के ही हाथ में है। महिलायें अपने अज्ञानता और अनुभवहीनता के कारण पुरुषों पर ही निर्भर होती हैं। ऐसी स्थिति में आरक्षण का अर्थ हीन होना लाजमी है। इसके लिए आवश्यक हो जाता है कि पंचायती राज में महिला प्रतिनिधियों में जागरूकता लाकर उन्हें प्रशिक्षित किया जाएए ताकि वह अपनी भूमिका को अच्छी तरह समझ कर स्वयं के दायित्वों का निर्वहन कर सकें।

पंचायत में कार्यरत महिलाओं को समय.समय पर योजनाओं की जानकारी प्रदान की जाए जिससे वे अपने प्रति जवाबदेही को समझ सके और अपनी भूमिका के संपादन हेतु जागरूक हो सकें। निम्न बिंदुओं पर अमल करने से पंचायती राज में महिला महिलाओं की सहभागिता सुनिश्चित हो सकती है रू.

1ण समय.समय पर ग्राम सभाओं में महिला प्रतिभागियों के लिए बैठक रख उनको राजनीतिक जानकारी देकर उन्हें जागरूक किया जाना चाहिए।

2ण महिला प्रतिभागियों के लिए समय.समय पर प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए जिससे उन्हें नई भूमिका के निर्वहन में दिशा.निर्देश प्राप्त हो सके।

3ण पंचायत में कार्यरत महिलाओं को समय.समय पर नए कार्यक्रमों की जानकारी दी जानी चाहिए ताकि योजनाओं की सफलता के लिए पूर्व तैयारी सही तरीके से हो सके।

4ण महिला प्रतिनिधियों को यह मालूम होना चाहिए कि किसी कार्यक्रम के लिए उन्हें कितने संसाधन उपलब्ध कराये जा रहे हैंण।

5ण समय.समय पर महिलाओं को प्रशिक्षण के द्वारा प्रशिक्षित कर योजनाओं के प्रभावशाली बनाए जाने के लिए प्रयास किया जाना चाहिए ताकि योजनाओं को लक्ष्य तक पहुंचाया जा सके।

6ण संचार के माध्यमों द्वारा समय.समय पर सूचनाओं का प्रसारण कर वर्तमान समय में चलाई जा रही योजनाओं के बारे में उन्हें अवगत कराया जाना चाहिए ताकि योजनाओं को सही तरीके से कार्यान्वित किया जा सके।

निष्कर्ष .

इस प्रकार हम देखते हैं कि विभिन्न योजनाओं में महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु व्यापक रणनीति बनाई गई हैं ताकि उनके परिणाम सुखद हों। किंतु यह बात भी सच है कि योजनाओं का सीधा लाभ उन तक न पहुंच कर लुभावने सपने की तरह होते हैं। अगर लाभुकों और योजनाओं के बीच की दूरियाँ को काट दिया जाए तो बात कुछ और होगी। यह कहा जा सकता है कि पंचायती राज व्यवस्था से महिला सशक्तिकरण को काफी बल मिला है। ग्रामसभा से लेकर संसद तक महिलायें अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो रही हैं। चूल्हे.चौके तक ही सीमित रहने वाली महिलाओं ने घर के बाहर भी जिम्मेदारियों का बखूबी निर्वहन कर यह साबित कर दिया है कि उनमें भी क्षमतायें हैं जो अवसर की प्रतीक्षा कर रही हैं। पंचायती राज व्यवस्था में महिला आरक्षण ने जहाँ एक और उन्हें मानसिक संबल प्रदान किया है वहीं उनमें आत्मविश्वास भी जगाया हैए जिससे राजनैतिक रूप से हाशिए पर पड़ी महिलाओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य हुआ है। राज्य सरकार और विभिन्न शैक्षिक संस्थायें महिलाओं को प्रशिक्षित कर रही है जिससे महिलाओं की सोंच और समझ की धरातल का विस्तार हो रहा है। अगर यह कहा जाए कि अपने आने वाले समय में महिलायें और भी सशक्त होकर उभरेंगी तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1ण आलोक चेतन आदित्य . महिला सशक्तिकरण रू हमारे समाज का सहज स्वरूप . अंक 8 मार्च 2016 केंद्रीय समाज कल्याण बोर्डए नई दिल्ली।

2ण्नीरा देसाई .विमेंस एंड सोसाइटीए एसएनडीटी यूनिवर्सिटी मुंबई।

3ण आशारानी . महिलाएं और स्वराजए प्रकाशन विभागए सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकारए नई दिल्ली।

4ण देसाई मीरा वार्ता; 2009द्ध भारतीय समाज में महिलायेंए राष्ट्रीय पुस्तक न्यासए नई दिल्ली।

5ण्महिपाल ;2017द्ध पंचायत में महिलाएंए राष्ट्रीय पुस्तक न्यासए नई दिल्ली।

6ण हिमांशु शेखर; 2014द्ध पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की बढ़ती भागीदारीए कुरुक्षेत्र।

7ण बंदोपाध्याय डी ;2004द्ध ॰ न्यू इश्यूज इन पंचायती राज॰ कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी नई दिल्ली।

8ण्सच्चिदानंद ;2007द्ध॰ एंपावरमेंट ऑफ दलित्स श्रो पंचायती राज॰ बिहार एक्सप्रिऐन्सए सीरियल पब्लिकेशन्सए नई दिल्ली।